शोध–प्रारूप

नागपुरी लोकगीतों का साहित्यिक सौन्दर्य : एक अध्ययन

पीएच. डी उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय

वर्ष: 2024

शोध निर्देशक

डॉ. पार्वती मुन्डू
सहायक प्राध्यापक
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा, राँची।
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

किरण कुमारी
यू. जी. सी./नेट
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

नागपुरी लोकगीतों का साहित्यिक सौंदर्य: एक अध्ययन

भूमिका:

लोक साहित्य किसी भी भाषा साहित्य का प्रमुख अंग है। संसार में बहुत सी भाषाएं हैं, जिनमें लोक साहित्य के सिवा कोई अन्य साहित्य नहीं मिलता। विशेषतः लोकगीत तो किसी भी भाषाई समाज और संस्कृति की आत्मा का परिचय देते हैं। सहजता और स्वाभाविकता लोकगीतों की विशिष्टता है। अधिकतर कहा जाता है कि लोकगीत साहित्यशास्त्र के बंधनों से बंधे नहीं होते हैं। लेकिन अपनी पूरी स्वच्छन्दता के होते हुए भी उनमें साहित्यिक सौंदर्य के सारे उपकरण मिलते हैं।

गीत, शब्दों का एक समूह है,जिसे एक लय, धुन, या संगीत के साथ जोड़ा जाता है जिसे गाया जाना चाहिए। छन्दात्मक छन्द से सबसे अधिक निकटता से संबंधित, गीत किसी विचार या भावना को संप्रेषित करने के लिए संगीत की ध्वनि की गुणवत्ता का उपयोग करते हैं। सभी लोकगीतों की रूपों की तरह लोकगीत संरक्षण के लिए मौखिक परंपरा पर निर्भर करते हैं। लोकगीत कई संगीतमय लोक रूपों जैसे कि तुकबंदी और मंत्रों को शामिल करते हैं और काम, जन्म, मृत्यु या शोक जैसे सार्वभौमिक अनुभवों का पता लगाते हैं। अपने संगीतमय स्वभाव के कारण, लोकगीत लोक साहित्य के सबसे यादगार रूपों में से हैं। कुछ विद्वानों का सुझाव है कि संगीत के साथ सेट की गई लोक कविता को भी लोकगीत माना जा सकता है।

झारखण्ड, बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, नेपाल, असम, पच्छिम बंगाल, अंडमान और बंगला देश के विभिन्न जिलों में बसे हुए सदान व आदिवासियों की भाषा नागपुरी में गाये जाने वाले लोकगीतों में सदान लोक संस्कृति के अनुभव सुरक्षित हैं, साथ ही नागपुरी लोकगीतों में संगीत और साहित्य के सभी आकर्षण भी है। इसी कारण नागपुरी लोकगीतों का प्राचीन परंपरा से आज तक इनका साहित्यिक सौंदर्य प्रभावित करता है। नागपुरी लोकगीतों के कई संकलन

प्रकाशित हुए हैं। इन सब में नागपुरी लोकगीतों की साहित्यिक सौंदर्य लोगों को आकृष्ट करता है। प्रस्तावित शोध कार्य नागपुरी लोकगीतों की साहित्यिक विशेषताओं को रेखांकित करने के उद्देश्य से ही संयोजित है।

शोध विषय संबंधि पूर्व कार्य :

नागपुरी भाषा और साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान हुए हैं। पीएच. डी. उपाधि के लिए नागपुरी भाषा, लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों पर शोध प्रबंध प्रस्तुत हुए हैं। नागपुरी लोकगीतों के क्षेत्र में भी काफी अध्ययन हो चुकी है। लेकिन अभी तक नागपुरी लोकगीतों की साहित्यिक सौंदर्य का समुचित मूल्यांकन नहीं हुआ है। अभी तक इन लोकगीतों को संस्कार, त्यौहार, नृत्य-संगीत, से जोड़कर ही मूल्यांकित किया गया है।

प्रस्तावित शोध कार्य में पहली बार नागपुरी लोकगीतों के साहित्यिक सौंदर्य के अध्ययन और मूल्यांकन का प्रयास किया जाएगा, निश्चिय ही यह मौलिक शोध प्रयास होगा।

प्रस्तुत शोध संबंधि विषय जिस पर पूर्ण कार्य किया गया है, जिसका विवरण निम्न प्रकार हैं-

1. नागपुरी गीतों में श्रृंगार रस - डॉ. विसेश्वर प्रसाद केशरी
2. नागपुरी काव्य में प्रकृति चित्रण - डॉ. त्रिवेणी नाथ साहु
3. नागपुरी गीतों में छन्द रचना - डॉ. कुमारी बासन्ती
4. नागपुरी लोकगीत साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ. कलावती ओहदार
5. नागपुरी लोकगीत और मांदर के ताल - मनपुरन नायक
6. नागपुरी गीतों में प्रमुख रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन - डॉ. रामजय नाईक

अनुसंधान का उदेश्य एवं महत्व (प्रासांगिता, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में) :

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक जितने भी अनुसंधान कार्य हुए हैं, सभी के कुछ न कुछ उदेश्य एवं महत्व रहे हैं, क्योंकि जब तक उस कार्य का उदेश्य न हो वह कार्य की कल्पना नहीं कर सकते। उसी प्रकार प्रस्तावित शोध कार्य का लक्ष्य नागपुरी लोकगीतों में मौजूद साहित्यिक उपकरणों की तलाश करना है। अधिकतर यही मान्यता है कि लोकगीत रस, अलंकार, छन्द आदि शास्त्रीय बंधनों से मुक्त हैं। उन पर तो शास्त्र का अनुशासन चलता है और न उनमें साहित्यशास्त्र के नियम लागू होते हैं। लेकिन वास्तविकता तो यह है कि लोकगीत साहित्यिक दृष्टि से प्रभावशाली है।

नागपुरी लोकगीत भी इस बात को प्रमाणित करते हैं कि उनमें साहित्यशास्त्र के विभिन्न पक्ष उपलब्ध है। भाव पक्ष और कला पक्ष के सारे उपकरण इन में भी उसी तरह उपलब्ध है जैसे शिष्ट गीतों में मिलते हैं। प्रस्तावित शोध कार्य नागपुरी लोकगीतों में साहित्यिक सौंदर्य के विधा उन्हीं उपकरणों का मूल्यांकन करने का लक्ष्य है। यह एक नवीन और मौलिक शोध विषय है जिस पर अभी तक अनुसंधान नहीं हुआ है। इस नए विषय पर शोध कार्य का उदेश्य नागपुरी लोकगीतों के साहित्यिक महत्व का रेखांकन भी है। यह शोध अनछुए पहलुओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन की दिशा में एक पहल होगी। मेरे लिए सृजनात्मक सोच की चुनौति एक सुखद अनुभूति होगी। कला एवं भाव पक्षों को करीब से जानने का काम होगा। तथा गहनता के साथ मूल्याकंन किया जाएगा। नयी-नयी विद्या के लोकगीत के छन्द, अलंकारों तथा रस अध्ययन पर प्रकाश डालना। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लोकगीतों की साहित्यिक सौंदर्य की परिकल्पना होगी।

महत्व :-

प्रस्तुत शोध विषय 'नागपुरी लोकगीतों का साहित्यिक सौंदर्य: एक अध्ययन' जो वर्तमान समय में एक नई विषय है। इस विषय के महत्व को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है-

1. इस विषय का अध्ययन से नागपुरी भाषा की प्राचीनतम इतिहास की जानकारी प्राप्त होगी।
2. यह विषय के अध्ययन से नागपुरी के साहित्यिक सौंदर्य की झलक मिलेगी।
3. नागपुरी गायक-गायिकाओं का नागपुरी भाषा के प्रति उनकी भूमिकाओं के बारे में जान पाएंगे।
4. प्रस्तुत विषय के अध्ययन से नागपुरी भाषा के राग-रागिनी एवं संगीत के बारे में हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
5. यह विषय के अध्ययन से झारखंड की संस्कृति एवं परंपरा को जान सकेंगे।
6. आर्य भाषा परिवार में नागपुरी भाषा का सरस एवं मधुर भाषा का ज्ञान प्राप्त होगी।
7. झारखंड के विभिन्न पर्व-त्यौहार, कला, संस्कृति को जान सकेगें।
8. विभिन्न अवसरों में बजाए जाने वाले प्रमुख पारंपरिक वाद्ययंत्रों एवं अखड़ा की परंपरा की जानकारी होगी।
9. इस शोध कार्य से नागपुरी की साहित्यिक परंपराओं की पूर्ण जानकारी प्राप्त होगी।
10. बड़े बुजुर्गों के अनुभव एवं विचार को स्पष्ट रूप से हम जान पायेगें।
11. प्रस्तुत शोध विषय से समाज के नवयुवक लेखकों को प्रेरणा मिलेगी।

शोध कार्य की प्रासंगिकता :

प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित अनुसंधान अब तक नहीं हुआ है। इस पृष्टभूमि में शोध के महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता। सदान समुदाय भी आदिवासी समुदाय की आदिकाल से ही प्रकृति के पूजक रहे हैं, इसे कहने में किसी भी प्रकार की संकोच नहीं है। वे प्रकृति को किसी न किसी रूप में जरूर पूजते हैं। प्रकृति में ये जन्म लेते हैं और उनकी गोद में रहकर, पलकर बड़ा होते हैं। इनका प्रकृति के साथ प्रेम और उनके प्रति अस्था और विश्वास उनकी गीतों में दिखाई पड़ती है। सदान समुदाय ने अपने जीवन की सभी गतिविधियों में इन गीतों को

शामिल किया है। जिनमें पर्व-त्यौहार, हर्ष-उल्लास, उमंग, संस्कार, नृत्य-संगीत, गायन-वादन, खेल जगत, और अखरा की परंपरा इत्यादि हैं। इसी कारण नागपुरी लोकगीतों में सदान समाज और संस्कृति के विभिन्न आचार-व्यवहारों की उपस्थिति है। लोक गीतों में सदानों का इतिहास तथा समाज की परंपरागत संस्कार, रीति-रिवाज, प्रकृति प्रेम, खेती-कृषि, पर्व-त्यौहार, जीवन दर्शन मूल्य आदि विशेषताएँ दिखलाई पड़ती है। लेकिन आश्चर्यजनक तौर पर इन गीतों में साहित्यिक सौंदर्य भरपूर है, केवल इसे गहनता पूर्वक अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य करने की जरूरत है। प्रस्तावित शोध कार्य नागपुरी लोकगीतों की इसी साहित्यिकता से संबंधित है।

प्रकल्पना :

प्रस्तावित शोध कार्य के अंतर्गत नागपुरी लोकगीतों के साहित्यिक सौंदर्य के मूल्यांकन की योजना है। शोध कार्य की प्राक्कल्पना तीन स्तरों से संबंधित है -

1. लोकगीत और उनकी विशेषताएँ
2. नागपुरी लोकगीत और उसके प्रभेद
3. नागपुरी लोकगीतों में साहित्यिक गुण

इन तीन स्तरों पर शोध कार्य के व्यवस्थित विस्तार की प्राक्कल्पना ही प्रस्तावित अनुसंधान की विषय व्याप्ति है।

अध्ययन पद्धति :

अनुसंधान के लिए संकलन और मूल्यांकन की जिन दिशाओं की अपेक्षा होती है, उनका पालन करते हुए प्रस्तावित शोध कार्य में प्राक्कल्पना के अनुरूप विषय के अध्ययन की योजना है। इस अनुसंधान के अन्तगर्त शोध के लिए तीन स्तरों पर परिश्रय की अपेक्षा होगी -

1. लोकगीतों का संकलन

2. लोकगीतों में साहित्यिक उपकरणों की खोज
3. लोकगीतों में साहित्यिक सौंदर्य का मूल्यांकन

इन स्तरों पर नागपुरी लोकगीतों की साहित्यिक विशिष्टता का अध्ययन का प्रयास ही प्रस्तावित अनुसंधान की पद्धति होगी। इसके लिए विभिन्न पुस्तकालयों में पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन वांछित होगा। साथ ही नागपुरी लोक साहित्य के विद्वानों से साक्षात्कार और विचार-विमर्श भी अनुसंधान की पद्धति का हिस्सा होगा। इन सारी दिशाओं पर सक्रीय होकर ही प्रस्तावित शोध कार्य को सम्पूर्णता मिलेगी।

- **शोध विधि**

अभी तक जितने विषय से संबंधित शोध हुए हैं, सभी की अपनी विधि देखने को मिले हैं। विधि यानि नियम से बंधे होना, अर्थात विभिन्न नियमों के आधार पर शोध कार्य पूरा किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाएगा-

1. तुलनात्मक विधि
2. वर्णात्मक विधि
3. आलोचनात्मक विधि
4. समीक्षात्मक विधि
5. साक्षात्कार विधि
6. प्रश्नावली विधि

- **शोध उपकरण :**

1. शोध आलेख
2. टेपरिकार्डर
3. नक्सा

4. वेबसाइट/इंटरनेट
5. चित्र
6. प्रश्नावली
7. कैमरा
8. कम्प्यूटर
9. मोबाईल
10. कॉपी, कलम
11. पुस्तकें
12. आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ

अध्यायीकरण

नागपुरी लोकगीतों का साहित्यिक सौंदर्य: एक अध्ययन

अध्यायीकरण

1. प्रस्तावना

- शोध का परिचय
- शोध कार्य की प्रसंगिकता
- शोध कार्य का उद्देश्य
- शोध विषय की नवीनता

प्रथम अध्याय:- लोकगीतों का सामान्य परिचय

1. नागपुरी लोकगीतों का परिचय
2. नागपुरी लोकगीतों की परिभाषा
3. नागपुरी लोकगीतों का वर्गीकरण
4. नागपुरी लोकगीतों का महत्व

द्वितीय अध्याय:- नागपुरी लोकगीतों का भाव सौंदर्य

1. भाव पक्ष - श्रंगार रस, वीर रस, करूण रस, हास्य रस, अद्भूत रस, विभत्स रस, रौद्र रस
2. कला पक्ष - भाषा शैली

तृतीय अध्याय:- नागपुरी लोकगीतों की भाषागत सौंदर्य अथवा कला पक्ष

1. भाषा - अविधा, लक्षणा, व्यंजना

2. अलंकार, छन्द
3. प्रतीक, विम्ब, कल्पना
4. गुण, दोष

चतुर्थ अध्याय:- नागपुरी लोकगीतों की प्रवृतियाँ

1. भक्ति गत प्रवृतियाँ - सगुन भक्ति, निर्गुण भक्ति आदि।
2. मेहनती समाज का चित्रण
3. लोक जीवन का दर्शन
4. आधुनिकता की छाप
5. प्रकृति से आत्मीय लगाव
6. खेलगीत/ बालगीत
7. चम्पू काव्य
8. अन्य गीत- (क) नारी चित्रण

   (ख) नीति गीत

पंचम अध्याय:- नागपुरी लोकगीतों में राग-रागिनी, वाद्य यंत्रों एवं नृत्य के द्वारा सौंदर्य बोध

1. झुमर, डमकच, उदासी, पावस, अंगनई, फगुआ, जादुर, सोहराय
2. मांदर, बांसुरी, नगाड़ा, केन्दरा, टुहिला, शहनाई, ढांक, ढोल, झांझ, सारंगी, भेर आदि।
3. नृत्य के प्रकार

षष्ठ अध्याय:- नागपुरी लोकगीतों की शैलीगत सौंदर्य

1. गीतसार
2. आन्तरिक बोध

3. सवाल जबाब रूप से

उपसंहार अथवा निष्कर्ष

परिशिष्ट

आधार ग्रंथों की सूची

संदर्भ ग्रंथों की सूची

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

साक्षात्कार सूची

चित्रावली

नोट:- प्रस्तावित शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक

डॉ. पार्वती मुन्डू

सहायक प्राध्यापक

जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा, राँची।

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी

किरण कुमारी

यू. जी. सी./नेट

स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

आधार ग्रंथों की सूची:-

1. अनुज डॉ. भुवनेश्वर - नागपुरी लोक साहित्य - झारखण्ड झरोखा, राँची-1992।
2. ओहदार डॉ. कलावती - नागपुरी लोकगीत साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन - झारखण्ड झरोखा, राँची, 2002।
3. उपाध्याय डॉ. कृष्णदेव - लोक साहित्य की भूमिका-साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, 56, रानीमण्डी (बच्चा जी की कोठी), इलाहाबाद-211003।
4. कृष्ण संजय- झारखंड के पर्व-त्योहार, मेले और पर्यटन स्थल, राजा पाॅकेट बुक्स, 330/1, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-110084 वर्ष- 2016
5. गिरिराज डॉ. गिरिधारी राम गौंझू - झारखण्ड का लोकसंगीत - झारखण्ड झरोखा, राँची 2015।
6. नायक मनपुरन-नागपुरी लोकगीत और मांदर के ताल- झारखण्ड झरोखा, राँची 2015।
7. नाईक डरे. रामजय - नागपुरी गीतों में प्रमुख रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन -इंस्च्यूट फॉर सोसल डेवलोमेन्ट एंड रिसर्च, गाड़ी होटवार, राँची 835217, 2022।
8. नाईक डॉ. रामजय-नागपुरी लोकगीत आउर शिष्टगीत-इंस्च्यूट फॉर सोसल डेवलोमेन्ट एंड रिसर्च, गाड़ी होटवार, राँची 835217, 2022।
9. निधि विद्योत्तमा, ज्ञानोत्तम विधि - नागपुरी की साहितिक निबंध -झारखण्ड झरोखा, राँची, 2012।
10. महतो डॉ. अशोक कुमार- कुरमाली लोकगीतों में कुरमी समाज एवं संस्कृतिःएक अध्ययन, प्रकाशक-झारखंड झरोखा, राँची वर्ष-2016
11. सिंन्हा डॉ. आदित्य प्रसाद- झारखंड की जनजातीय लोक संस्कृति, पर्व-त्योहार एवं देवी-देवता, प्रकाशक- विकल्प प्रकाशन दिल्ली-110094
12. हेम्ब्रम डॉ. रतन- संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, प्रकाशक-झारखंड झरोखा, राँची, वर्ष-2016

संदर्भ ग्रंथों की सूची:-

1. अनुज डॉ. भुवनेश्वर - नागपुरी लोक साहित्य - झारखण्ड झरोखा, राँची-1992।
2. ओहदार डॉ. कलावती - नागपुरी लोकगीत साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन - झारखण्ड झरोखा, राँची, 2002।
3. उपाध्याय डॉ. कृष्णदेव - लोक साहित्य की भूमिका-साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, 56, रानीमण्डी (बच्चा जी की कोठी), इलाहाबाद-211003।
4. केशरी डॉ. विसेश्वर प्रसाद- नागपुरी लोकगीत (वृहद संग्रह), नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची।
5. केशरी डॉ. सविता- नागपुरी कवि कंचन: जीवन और साहित्य - नागपुरी संस्थान पिठोरिया, राँची, 2015।
6. 'कविरत्न' शर्मा शारदा प्रसाद - नवांजलि -छोटानागपुर प्रकाशन केन्द्र, श्रध्दानन्द रोड, राँची, 834001, 1997।
7. कलाधर कृष्ण प्रसाद साहु- लोपाई, छंद - नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची 2011।
8. कुमारी डॉ. बासन्ती, नागपुरी गीतों में छन्द रचना, किशोर विद्या निकेतन, बी 2, 236 ए, भदैनी, वाराणसी-221001 वर्ष-1993
9. कृष्ण संजय- झारखंड के पर्व-त्योहार, मेले और पर्यटन स्थल, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-110084 वर्ष- 2016
10. कलाधर डॉ. कृष्ण-नागपुरी बालगीत, प्रकाशक- नागपुरी संस्थान, पिठोरिया 834006, वर्ष- 2017
11. कुमार डॉ. निरंजन- नृजाति विज्ञान, प्रकाशक- झारखंड झरोखा, राँची, वर्ष 2017
12. गिरिराज डॉ. गिरिधारी राम गौंझू - झारखण्ड का लोकसंगीत - झारखण्ड झरोखा, राँची 2015।

13.चतुर्वेदी डॉ. राजेश्वर प्रसाद- रस, दोष, छंद, अलंकार निरूप-सीतापुर रोड, लखनऊ-226020।

14.नायक मनपुरन - नागपुरी लोकगीत और मांदर के ताल - झारखण्ड झरोखा, राँची 2015।

15.नाईक डॉ. रामजय - नागपुरी गीतों में प्रमुख रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन - इंस्च्यूट फॉर सोसल डेवलोमेन्ट एंड रिसर्च, गाड़ी होटवार, राँची 835217, 2022।

पत्र-पत्रिकाओं की सूची:-

पत्र-पत्रिका	लेखक/संपादक	प्रकाशन	वर्ष
1. जय झारखण्ड	डॉ. विसेश्वर प्रसाद केशरी	डाल्टेनगंज	1971 ई०
2. शंखनाद	रामजीत सेनापति		1977 ई.
3.आदिवासी	राधाकृष्ण		3 फरवरी 1947 ई.
4. डहर	ईश्वरी प्रसाद		1971 ई.
5. जोहार सहिया	वंदना टेटे	राँची	
6. पझरा	डॉ. गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'		1985 ई.
7. दैनिक जागरण	पूरन चंद्र गुप्ता कानपुर		1942 ई.
8. प्रभात खबर	आशुतोष चतुर्वेदी	राँची (झारखण्ड)	1984 ई.
9. छोटानागपुर संदेश	डॉ. भुवनेश्वर अनुज		1976 ई.
10. बिहान पत्रिका	इलियास मजीद		
11. हिन्दुस्तान	शिवराम शंकर आवटे नोयडा (भारत)		1948 ई.
12. दैनिक भास्कर	रमेशचन्द्र अग्रवाल	पटना	1958 ई.
13. शुभम संदेश	सुकेश कुमार		2022 ई.
14. गोतिया पत्रिका	डॉ. बीरेन्द्र कुमार महतो		2011 ई.
15. कला संगम स्मारिका	पंडित योगेन्द्रनाथ तिवारी		1982 ई.
16. नागपुरिया समाचार	लक्ष्मी नारायण तिवारी		अक्टूबर 1966 ई.